



Buddhism in Mongol Empire

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

"For Mongols, birds of prey represented the link with the all-powerful sky god Tengri, and their ability to soar to the heavens, also the flight of the spirit at the moment of death..."

A GRIEF LAID BARE

A recent solo performance of *Traasadi* by Manav Kaul at the Rajasthan International Center left the audience in tears

## कांग्रेस को धन्यवाद प्रस्ताव पर मोदी का भाषण 'निराशाजनक' लगा

**कांग्रेस के अनुसार, 60 बार मोदी ने कांग्रेस का नाम लिया, पर, कोई नई बात नहीं की, केवल जवाहर लाल नेहरू व आपातकाल के अवगुण गिनाये और जोर देकर बताया कि कांग्रेस केवल एक ही परिवार के हित के अनुसार नीतियां बनाती हैं।**

-रेण मित्तल-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्लूरो-

नई दिल्ली, 6 फरवरी। राष्ट्रपति के अधिभाषण के धन्यवाद प्रस्ताव का राजसभा में जवाहर देते हुए, प्रधानमंत्री ने इन्द्र मोदी के 60 बार कांग्रेस का नाम

लिया। देश के लिये अपने जिज्ञन, जनता के लिये अपनी आशाओं और आकंक्षाओं तथा धन्यवाद के लिये अपनी योजनाओं की रूपरेखा को साझा करने के मामले में, इन्द्र मोदी के पास कहने के लिये कुछ भी नया नहीं है।

इसके अलावा, उनका भाषण कांग्रेस पार्टी के लिये अपशब्दों और निंदा की एक विश्वासदाता तथा धन्यवाद की रूपरेखा में जवाहर लाल नेहरू से श्रूतता की, आपातकाल पर आये और यह बताते हुए कि यह विस तरह से एक परिवार, वंशवाद, तुलिंग की राजनीति, कोटा, परिषद राज तथा ऐसी ही चीजों की पार्टी रही है।

उनके पूरे भाषण में अतीत, शिक्षायों की कहानी तथा कांग्रेस के प्रति कहता पूरी तरह दिखाइ दे रही थी। मोदी बार-बार कहते रहे कि सबका

- कांग्रेस ने यह भी आरोप लगाया कि अमेरिका से "डिपोर्ट" किये गये भारतीय नागरिकों को हाथों में हथकड़ियाँ व पैरों में बेहियाँ डालकर, बड़े अपमानजनक तरीके से एयरफोर्स के हवाई जहाज से 40 घंटे की यात्रा करा कर, भारत भेजा गया। पर, प्रधानमंत्री मोदी ने इस अपमानजनक बर्ताव के लिये अपने भाषण में कुछ भी नहीं कहा।
- कांग्रेस का यह भी कहना था कि लोकसभा में विषय के नेता ने राहुल गांधी धन्यवाद प्रस्ताव पर अपने भाषण दिया और उस भाषण में जो भी महत्वपूर्ण मुद्दे उठाये उनका भी प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में कुछ भी जिक्र नहीं किया, हालांकि, उमीद थी कि वे इन मुद्दों को जल्द संबोधित करेंगे अपने जवाब में।

साथ, सबका विकास भाजपा का मंत्र है और विधायकों के लिये पहले राहुल आता है, अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग चुप्पी साथे हुये थे और इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

विन्दु पर कहने के लिये कुछ भी नहीं था।

रसेन ने यह भी आरोप लगाया कि लोकसभा में विषय के लिये कुछ भी नहीं था। रसेन ने यह भी कहने के लिये कुछ भी नहीं था। उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों में बेहियाँ

थीं, 40 घंटे तक वे हवाई जहाज में अपनिवारीका से युजर हो रहे थे, उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जा रहा था, और इन्द्र मोदी और उनके बालों के बीच चारों बढ़ाये थे। इन दोनों ने ट्रम्प ड्राग निर्वाचित इन प्रवासियों के समर्थन में एक बढ़ता तरह बढ़े गये थे, और इन्द्र मोदी ने यह अपने अपेक्षित भारतीयों की दुर्दशा के सुक दर्शक बने हुए हैं। उनके हाथों में हथकड़ियाँ थीं, पैरों म









## #TRENDS &amp; GADGETS

## Tips &amp; Tricks

Getting used to Apple iPad can take some time, but these tips and tricks make it easier than ever.



For many, the size and ease of the iPad make it a replacement for a laptop or a tablet. Perhaps, what makes the iPad so

interesting is that it offers the benefits of a laptop in a tablet form factor. If you are new to the iPad, there are a lot of clever little features to elevate your experience to a whole new level.

## Use Quick Notes on the iPad

Starting with iPadOS 15, Apple added a feature called *Quick Notes* to the iPad. With this feature, you can quickly jot down a note anywhere, at any time. It can be activated by swiping in from the bottom right corner of the iPad with the Apple Pencil. This creates a floating window that can be moved around the screen.

To enable *Quick Notes* on the iPad, here's what you need to do:

- Open Settings and tap on General in the panel on the left.
- Now, locate Gestures amongst the options available on the right.
- Next, look for the Left Corner Swipe or Right

## Drag and drop files

Moving photos from the Photos app to another one is easy. All you need to do is simply press and hold a photo and it will start following your finger.

Just pen the Photos app.

In grid view, press and hold your finger down on a photo, until the quick action menu appears, and then move your finger

around so that it floats under your finger.

- Use your other finger to leave the app and navigate to where you want to drop the photo.
- You will notice a green plus sign on the corner of the photo or video, if you can drop it off there.
- Lift your finger to drop the photo.

## Make Widgets stack

One of the new features of iPadOS 15 is to make a smart widget stack. A *Smart Stack* is essentially a collection of widgets, on top of one another. To create a smart widget stack, here's what you need to do:

- Long press your Home Screen and tap the plus (+) icon that appears in the top left.
- Select Smart Stack from the widget options in the

Buddhism in Mongol Empire PART:1

Kublai Khan explained his religious policy to Marco Polo as, "There are four Gods that are worshipped by everybody. Jesus Christ of the Christians, Muhammed of the Iranians, Moses of the Jews, and Buddha Chandamani. As regards to myself, I respect all of those four religions, but whosoever is the greatest and most honest in heaven, I wish to bless me."



Chagatai Khan.

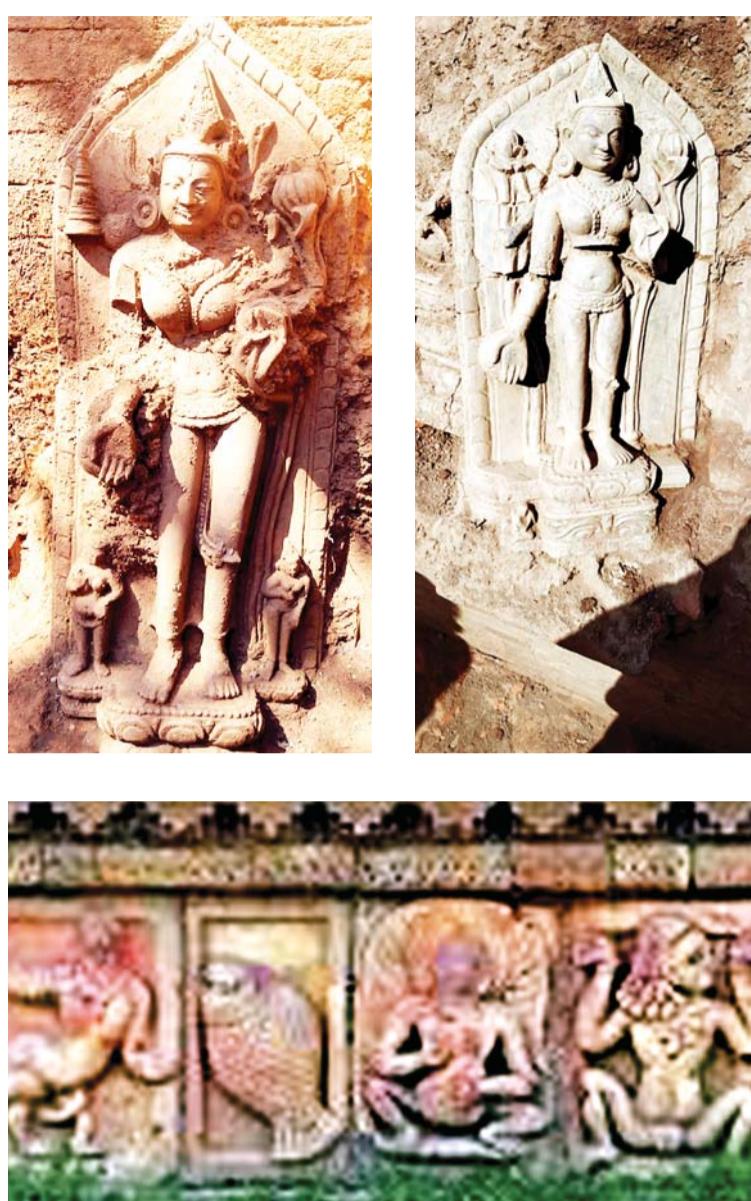


Kublai Khan.



Changz Khan.

Tengri.



## #MONGOL



**W**e know little about what the mongols were, although the Mongol rulers of India came from there. They were very different from the Mughals we know, and it is a reason enough to know them in their own environment. Nyamdayava has researched and written a detailed piece on the aspect of their association with Buddhism.

The ruling elite court, Khan, Khan and their relatives, accompanied by Mongol Aimaks and serving military people, carried their own religion, nomadic way of life, military discipline, hunt-

ing system and nomadic food, culture, as well as other traditions.

Over the time, a new mixed culture and tradition, as well as art, architecture, astronomy, the

introduction of paper money, monetary system emerged among the members of the Mongol Empire. This had given a new opportunity to bring people closer to understand each other and live friendly.

Additionally, the World postal system and 'Gerege' (Paiza) were created by the Mongol Empires. They also established Mongolian peace, known as 'Pax Mongolica', and also introduced the Yasa, Chinggis Khan's Constitution, which were spread and welcomed in their ruled countries.

The Mongol Khans also successfully implemented a firm and powerful security system to protect caravan traders on the Silk Road, the Tea Road and steppe Road, for promotion of trade relations between Asia and Europe.

These aforementioned facts were approved by remaining monuments, traveller's accounts, manuscripts, and archaeological findings. For instance, notable places and cities still exist. These are, Chagatai darvaza (Tashkent),

firmlly believed in Shamanism and exploited, better than anyone else in his time, the Tengeri worship of the Mongols in the interest of his political ambitions and great deeds. In this respect, he could be considered to have been a real founder of *Mongolian Tengrism* as the official political ideology of the Great Mongolian State.

In this connection, I quote Dr. Teresa Fitzherbert, "The Mongol birds of prey represented the link with the all-powerful sky god *Tengri*, and their ability to soar to the heavens. They also represented the flight of the spirit at the moment of death. Power of flight, attributed to the Mongol Shaman, was often signified by feathers attached to their shoulders. Chinggis Khan claimed descent from Tengri."

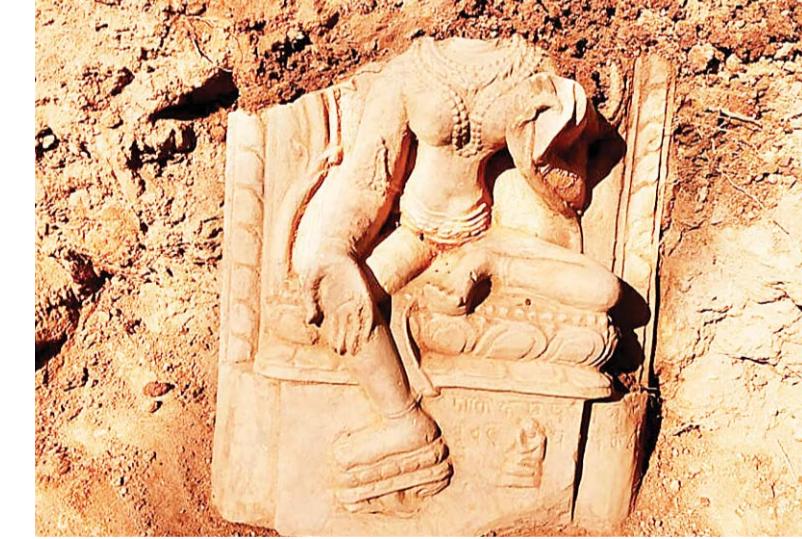
Juwana quotes the Shaman, and named him Chinggis Khan. The Armenian monk, chronicler Grigor of Akanes, records a tradition that the Chinggisid law code, the *Yasa*, was delivered by an eagle with power of speech and golden feathers. Budge notes that the Ilkhan Geikhatu (1291-1295) conferred a golden *payza* (*Gerege*) of *sunqur* (*gyrfalcon*) class on the Nestorian Patriarch Mar Yahb, when he visited him at Magaha. This may give additional explanation of Tengrism of Mongolian concept.

Kublai Khan knew well his own nomadic civilization, as well as all other civilizations, including the Confucianism, Buddhism, Arab-Islamic and European, Christian civilization, and he did his best to exploit their achievements successfully and selectively in conformity with his policy of Tengrism.

Kublai Khan explained his religious policy to Marco Polo as, "There are four Gods that are worshipped by everybody. Jesus Christ of the Christians, Muhammed of the Iranians, Moses of the Jews, and Buddha Chandamani. As regards to myself, I respect all of those four religions, but whosoever is the greatest and most honest in heaven, I wish to bless me."

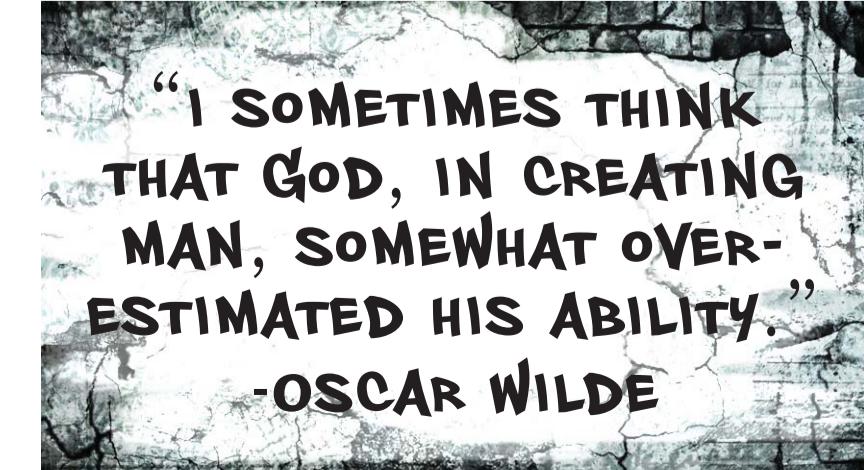
To be continued...

rajeshsharma1049@gmail.com



The broken deity, Tara, was unearthed during the second round of excavation.

## THE WALL

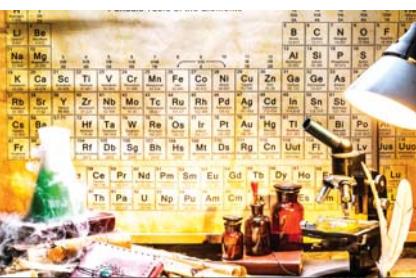
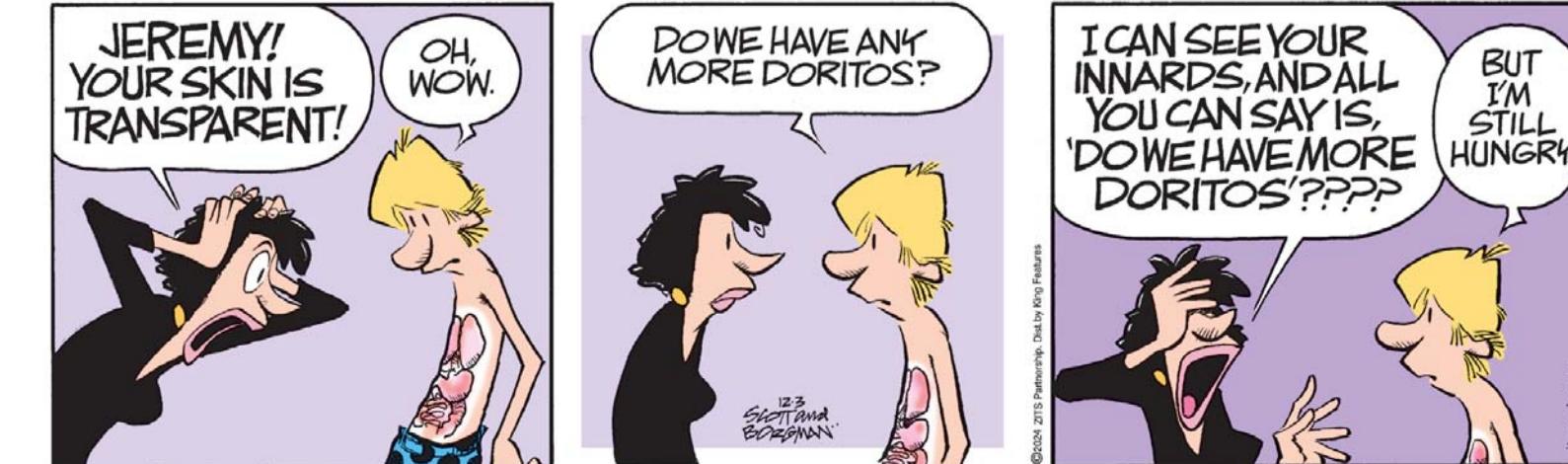


## BABY BLUES



By Rick Kirkman & Jerry Scott

## ZITS



## Periodic Table Day

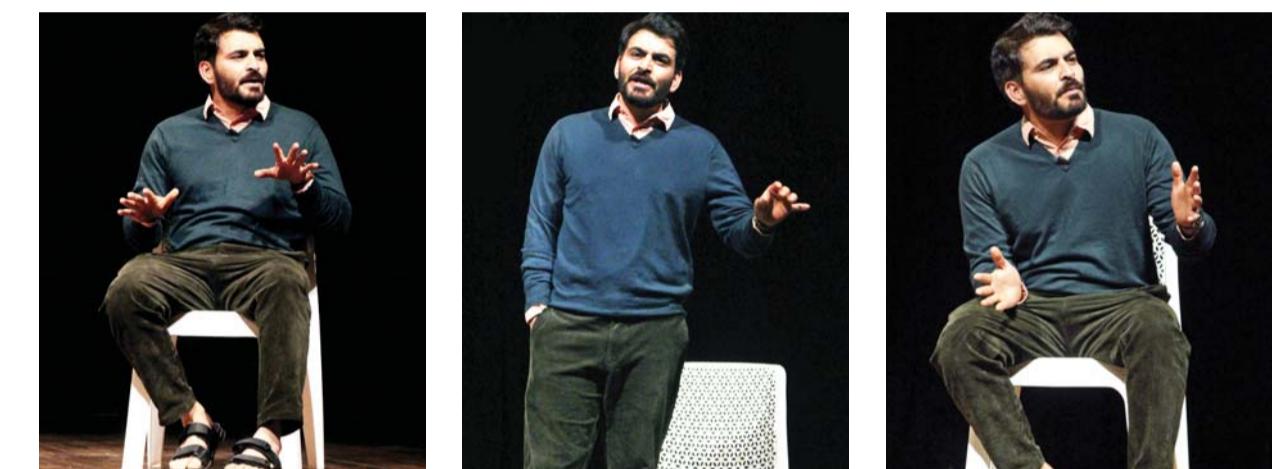
Periodic Table Day is a lively celebration dedicated to one of the chemistry's most important tools. This day shines a spotlight on the periodic table, a crucial chart that organizes all known elements in a way that helps scientists predict their behaviours. It's a day to recognize the brilliance behind this essential tool and its role in making complex scientific concepts more accessible and understandable. This tool has paved the way for numerous scientific breakthroughs, including the discovery of new elements and the development of innovative technologies. For students and educators, it's an indispensable learning aid.

P

## #THEATER

## A GRIEF LAID BARE

A recent solo performance of *Traasadi* by Manav Kaul at the Rajasthan International Center left the audience in tears. The play, which translates to 'tragedy' in Hindi, delves into the profound emotional landscape following a mother's death, resonating deeply with viewers. Kaul's powerful storytelling and raw vulnerability led the audience to confront their own experiences of loss, making it a transformative theatrical experience that lingered long after the final bow.



**Tusharika Singh**  
Freelance Writer and City Blogger

inside his world. At its core, *Traasadi* is a story about a man confronting the ghosts of his past. When the play opens, two years have passed since Kopal, the protagonist, last saw his mother. News arrives, that shatters him, pulling him away from his life in Bombay back to a home that is no longer home. His village has changed. Childhood friends are now strangers. And his mother? She is no longer there to welcome him. What remains is emptiness, fragments of a life left behind, and an unshakable sense of regret. Kopal's performance is hypnotic, almost unbearable intimate. He does not shy away from his pain. In *Traasadi*, Manav Kaul turns these questions into an aching meditation on memory, grief, and unresolved wounds between a mother and son.

Kaul's performance is hypnotic, almost unbearable intimate. He does not shy away from his pain. In *Traasadi*, Manav Kaul turns these questions into an aching meditation on memory, grief, and unresolved wounds between a mother and son.

Recently performed at the Rajasthan International Centre in Jaipur on February 4, his mother's birthday, Kaul's adaptation of his short story *Maa* (from his book *'Theek Tumhare Peeche'*) is an immersive, intimate exploration of guilt, resentment, and the pain of realization that often comes too late. It is the kind of play that does not merely unfold on stage, it unfolds inside you.

## A Minimalistic Setting

One of the most searing lines of the play is deceptively simple, "*Maa jijna thakti, main utna gehra sotha.*" (The more exhausted my mother became, the more deeply I slept.) It lands like a gut punch, encapsulating the quiet, everyday cruelty of neglect, the kind that only reveals itself in hindsight.

## A Feminist Lament

The final moments of *Traasadi* are haunting. At his mother's pyre, Kaul recites a poem, curling into himself as the lights dim:

पृथि, जला नहीं है  
परन्तु, यह जल है  
पृथि, पानी का है  
पृथि, जल का है  
उसकी जलतव जो लाल है, वही भी हरा है  
उस खिलाफ़ से नहीं चला है,  
जब जलतव में एक रोने के मूल से नहीं चला है।

As the last line falls, silence envelops the hall. Not the kind that feels empty, but the kind that feels unbearably full. And then, Kaul folds his hands in gratitude. The applause comes, but only after the audience has allowed themselves a moment to breathe again.

Is *Traasadi* about the loss of a mother? Or is it about the quiet tragedies of everyday life, the failures of understanding that only become clear when it is too late? The play offers no easy answers. Instead, it leaves you with the echoes of its poetry, the weight of its silences, and the certainty that, long after you leave the theater, it will still be with you.

There is no grand opening. No introductory announcement. No dramatic lights. Instead, Kaul walks onto the stage, pours himself a cup of coffee, and sits in quiet contemplation. The set is stark, a chair, a bench, a desk with a lamp, a waste bin, and a coffee mug. The performance begins only after he gently requests the audience to put away their phones. You will feel it more deeply if you're fully present, he tells them. And then, without preamble, we are



By Jerry Scott & Jim Borgman









